१ ओअंकार (੧ੴ) सति गुर प्रसादि

इसलाम और गुरमत

तुल्नातमिक धर्म अध्ययन

>< >< >< >< >< >< >< >< >< >< ><

मूल रूप में

सिक्ख मिशनरी कॉलेज (रजि.)
लुधियाना द्वारा प्रकाशित पुस्तक

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ
Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882

Download Free

इसलाम और गुरमत

इसलाम अरबी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है परमात्मा के आदेश अथवा ईश्वरेच्छा में चलना। इसलाम (मुसलिम मत) का जन्म साउदी अरब में हुआ था। उस समय अरब के लोग कई कुटुंबों व कबीलों में बंटे हुए थे। इसलिए उन की सरगर्मियां अपने कबीले की भलाई तक ही सीमित थीं। प्रत्येक कबीले का एक मुखी होता था। वह ही राजकाज का अधिकारी और मुनसिफ (जज) होता था। अरब में कोई संगठित राज्य नहीं था।

धार्मिक तौर पर अरब-वासी सैंकड़े देवी-देवताओं की पूजा करते थे। उनकी धार्मिक सरगर्मियों का केंद्र मक्का था। मक्के में काबा नाम का एक धर्म स्थान था। इसमें 360 देवी देवताओं के बुत्त पड़े हुए थे। बुत्त पूजा के अतिरिक्त अरब लोग रूहों व भूत-प्रेतों में भी विश्वास रखते थे। उनमें जादू टोने भी प्रचलित थे। प्रत्येक का अपना भिन्न देवता था। प्रमुख शहरों में कही-कहीं पर ही लोग एकीश्वर के विचार को ठीक मानते थे। इन में (मक्का का) एक वरकाह-बिन-नफ़ूही (Wargah-bin-Nufai) नाम का व्यक्ति भी था। इस को यहूदी व इसाई धर्मो की जानकारी थी। उसने बाईबल के पहले भाग 'पुराने नियम' (Old Testament) के कुछ भागों का अनुवाद भी किया था। अरबवासी यहूदी धर्म की जानकारी रखते थे। यहूदी धर्म का मदीना में जोर था।

हज़रत मुहम्मद साहिब

उपरोक्त तरह के लोगों व वातावरण में, इसलाम के संस्थापक, हज़रत मुहम्मद साहिब का जन्म अप्रैल 570 ई (कुछ लोग 29 अगस्त भी लिखते हैं) को हुआ। मुहम्मद साहिब कुरैशी वंश के संस्थापक हाशिम के घराने में अब्दुल्ला कुरैशी के घर में जन्मे। उनकी माता का नाम आमिना था। उनके जन्म से पूर्व ही उन के पिता का देहावसान हो गया था।

जब आप छ: वर्ष के हुए तो माता जी भी चल बसे। माता की मृत्यु के पश्चात उनका लालन-पालन दादा अब्दुल मुतालिब को करना पड़ा। पर वह भी मुहम्मद साहिब को आठ वर्ष की आयु में उनके चचा-जान अबु मुतालिब के सपुर्द करके अल्ला-ताला को प्यारे हुए।

अबू तालिब एक व्यापारी था और व्यापार करने के लिए आस-पास के देशों में जाता था और कभी कभी अपने भतीजे मुहम्मद को भी साथ ले जाता था। इन दोरों के दौरान, बालक मुहम्मद को दूसरे धर्मो के बारे में काफी ज्ञान हो गया। खास करके इसाई पादरियों के साथ हुई बातचीत ने आप की रुचि को इसाई-सिद्धांतों की ओर प्रेरित किया। इस प्रकार आपने इसाई व यहूदी प्रचारकों से कई बातें सीखीं जिन को नया रूप दे कर उन्होंने इसलाम के सिद्धांत स्थापित किए।

20 वर्ष की आयु में आपने खदीज़ा नाम की अमीर विधवा की नौकरी कर ली। उसकी वस्तुएं बेचने के लिए आप बसरे और दमिश्क आदि स्थानों पर गए। खदीज़ा इनके काम (व्यापारिक सूझ) और ईमानदारी से बहुत खुश हुई और उनसे 25 वर्ष के हज़रत मुहम्मद से निकाह (विवाह) कर लिया। खदीज़ा की आयु 40 वर्ष की थी। खदीज़ा की गोद में हज़रत मुहम्मद के चार पुत्र व चार पुत्रियां हुई।

पुत्र : कासिम, अब्दुल्ला, ताहिर और तैय्यब ।

पुत्रियां : फातिमा, जैनब, कलयूम व ररीआ ।

खदीज़ा 65 वर्ष की आयु में गुजर गई। उसकी मृत्यु के पश्चात मुहम्मद साहिब ने और कई शादियां की। इन की संख्या कुछ इतिहासकार 9 व कुछ 11 बताते हैं। इनके अतिरिक्त दो दासियों की ज़िक्र भी किया जाता है, जिन में से एक इसाई व दूसरी यहूदी थी।

मुहम्मद साहिब अरब वासियों की धार्मिक और समाज़िक दशा से बहुत चिंतातुर थे। वे नहीं चाहते थे कि अरबवासी बुत्त पूजा करें। वे अरबों में डाकुओं, लुटेरों, ठगों, चोरों, व्यभिचारियों के अस्तित्व और भिन्न-भिन्न कबीलों में लड़ाई से बहुत दुखी थे।

मक्का की इमारत के नवनिर्माण और मरम्मत के समय, दो बार, संगे असवद (एक पवित्र पत्थर का नाम) को स्थापित करने के प्रश्न पर अरबी सरदारों में होने वाले झगड़े को मुहम्मद साहिब ने रोका।

आप गंभीर स्वभाव वाले थे। खदीज़ा के साथ विवाह के उपरांत तो और भी गंभीर रहने लग गए। वे मक्का के समीप 'हिज' नाम की पहाड़ी पर चले जाते और वहां धार्मिक प्रश्नों पर विचार करते। इसलामिक साहित्य के अनुसार 40 वर्षो की आयु में, इसी गुफा में उनको खुदा का फरिश्ता मिला। इस को देख कर आप बहुत घबरा गए। खदीज़ा, इस दशा में आपको वरकाह-बिन (विरका) के पास ले गई। उसने समझाया कि खुदा उनको पैगंबर बनाने लगा है। दूसरी बार फरिश्ते के आने से पश्चात मुहम्मद साहिब ने अपने पैगंबर होने का ऐलान कर दिया और अपने मत 'इसलाम' का प्रचार आरंभ कर दिया। उनके पहले तीन चेलों में जैद नाम का गुलाम, उनकी पत्नी खदीजा और वरकाह-बिन थे। फिर चाचा के पुत्र अली ने भी इसलाम धारण कर लिया। पर आप के चचा अबू तालिब ने (जिसने उनको पाला पोसा था), उनको पैगंबर तस्लीम न किया। वह जीवन भर मुहम्मद साहिब का विरोधी ही रहा।

भिन्न-भिन्न अवसरों पर उनको ज़बराईल फरिश्ते के द्वारा खुदा के पैगाम पहुंचते रहे, जिन को 'बहीआं उतरना' भी कहते हैं। 40 से 43 साल की आयु तक कोई बही न उतरी। इस समय कुल 40 व्यक्तियों ने इसलाम धारण किया। 43वें साल में उन्होंने फिर अपने मत का प्रचार आंरभ किया। 50 साल की आयु में खदीज़ा का देहांत हो गया। हज़रत, धर्म प्रचार का काम और अधिक जोश से करने लग गए। उन्होंने मूर्ति पूजा के विरुद्ध जेहाद आरंभ कर दिया और एक खुदा की बंदगी का उपदेश दिया। आपके नये विचारों के कारण मक्का में बहुत लोग आप के विरोधी हो गए। देवताओं के पुजारियों व मूर्ति-पूज लोगों ने आप की जान लेने के भी प्रयास किए और उनके चेलों को भी तंग करना आरंभ कर दिया। कइयों ने तंग आ कर इसलाम को त्याग दिया। ऐसे लोगों को ढांढस बंधाते हुए मुहम्मद साहिब ने नीचे लिखी आयत पढ़कर सुनाई :

''जिस आदमी ने मुसलमान होने के पश्चात खुदा का इनकार किया जबकि वह (आदमी) तंग किया गया और वह दिल से ईमान पर कायम रहा, इसमें उसका कोई कसूर नहीं।''

ज़ैद को साथ ले कर आप नवीन धर्म के प्रचार के लिए गांव-गांव गए पर बहुत स्थानों पर आपका विरोध ही हुआ । मक्का से 70 मील दूर, ताइफ नाम के शहर में आप अपने चचा अब्बास के पास भी गए। वह एक बड़ा जागीदार था। उसने भी प्रचार में सहायता करने की जगह पर हज़रत का विरोध किया क्योंकि वह 'लात' नाम की मूर्ति का पुजारी था।

मक्का वासियों ने अंततः मुहम्मद साहिब को कत्ल करने की योजना बनाई। पर इसका मुहम्मद साहिब को समय पर पता चल गया और व मदीना चले गए। मदीना में पहले ही इस्लाम फैल चुका था। जो लोग मदीना से मक्का में काबे के दर्शनों को आते थे उन में से कुछ मुहम्मद साहिब के श्रद्धालु बन गए थे और उन्होंने ही मदीना में इसलाम का प्रचार किया था। जब मुहम्मद साहिब मदीना गए तो लोगों ने उन का भरपूर स्वागत किया। इसी साल से ही हिज़री संवत शुरू होता है। हिज़रत के अर्थ हैं जुदाई अथवा बिछुड़ना। अत: मक्का से बिछुड़ने वाला साल, हिज़री संवत का पहला साल गिन गया। यह 622 ईसवीं सन था।

लगभग एक साल बाद मक्का वालों ने मुसलमानों को खत्म करने के उद्देश्य में मदीना पर हल्ला बोल दिया। मुसलमानों ने भी मुकाबला किया। बदर नाम के स्थान पर लड़ाई हुई। इसमें मुसलमान विजयी रहे। इसके पश्चात अहिद नाम की पहाड़ी पर लड़ाई हुई जिसमें मुसलमान हार गए। पर तीसरी लड़ाई (खंदक की लड़ाई) में मुसलमानों ने कुरैशों को कमर तोड़ हार दी और मुसलमानों के हौंसले बढ़ गए। इस साल मुहम्मद साहिब ने रोम के इसाई कैसर, ईराम के पारसी बादशाह और एबासीनियां के राजा को मुसलमान बनने की दावत दी पर उनकी ओर से त्रृस्कार भरे उत्तर मिले। इतना कुछ होने के बावजूद भी आम लोगों में हज़रत का धर्म फैलने लग गया।

खंदक की लड़ाई से 6 वर्ष पश्चात सन 630 ई. में दस हजार मुसलमान ले कर मक्का पर कब्जा कर लिया। काबे की परिक्रमा की और संगे असवद को चूमा। फिर उन्होंने अथल नाम के देवता का बुत्त अपने ही हाथों गुर्ज मार कर चूर-चूर कर दिया। बाकी के 360 बुत्त भी तोड़ कर काबा से बाहर फेंक दिए। मंदिर की दीवारों पर अंकित तस्वीरों को भी खुरचवा कर मिटा दिया। फिर काबे के मंदिर को 'किबला' स्थापित किया और खुदा द्वारा यह हुकम सुनाया : **"हमेशां निमाज़ पढ़ते समय मुंह किबला की ओर करके प्रार्थना करो।"**

हज़रत मुहम्मद जीवन के अंत तक धर्म प्रचार करते रहे और जंग लड़ते रहे। उन के अंतिम समय तक इसलाम यमन, बहरीन, यमामा, ओमान, इराक और सीरिया तक फैल चुका था। 632 ई में उन्होंने काबा की अंतिम यात्रा की और वहां पर एक लाख के समूह को संबोधित किया। इस अंतिम उपदेश में उन्होंने लोगों को खुदा से डरने, नेक काम करने, अपनी पत्नियों से स्नेह पूर्ण व्यवहार करने, गुलामों के साथ सदव्यवहार करने, गुनाहों से बचने, सूदखोरी (ब्याज) न करने और बदले की भावना का त्याग करने की प्रेरणा की।

फिर आप मदीना आ गए। उनका स्वास्थ्य लगातार बिगड़ने लग गया और अंत 8 जून, 632 ई. को उनका देहांत हो गया।

इसलाम का धर्म ग्रंथ कुरान :

कुरान मुसलमानों का धर्म ग्रंथ है। इसको फुरकान, कुरान मजीद, कुरान-शरीफ और अल-किताब आदि नामों से भी पुकारा जाता है। यह सिपारों (अध्यायों), सूरतों (संपूर्ण शब्दों) रकूहों (कुछ शब्दों का जोड़ या पैरा) और आयातों (वाहिद कलाम अथवा श्लोकों) में बंटा हुआ है। मौजूदा कुरान के 114 सूरतें व 6666 आयतें हैं। कुरान के कुल अक्षरों का जोड़ 323741 है और 79436 पद है। 114 सूरत (पूरे कुरान) का महीने में पाठ करने के लिए 7 मंज़िलें निश्चित की गई हैं। यह ग्रंथ पहले अरबी भाषा में लिखा गया था।

कुरान का अर्थ पढ़ना या पढ़े जाना है। मुसलमानों के विश्वास के अनुसार कुरान एक इलहामी पुस्तक है। कहा जाता है कि यह धर्म ग्रंथ उन आयतों (श्लोकों) का समूह है, जो भिन्न-भिन्न समय पर खुदा (ईश्वर) ने फरिश्तों के द्वारा मुहम्मद साहिब तक पहुंचाई थीं।

'कुरान' मुहम्मद साहिब के देहावसान के पश्चात ही पुस्तक के रूप में आई। माना जाता है कि पहले यह खजूर के पत्तों सफेद पत्थरों और हड्डियों पर अंकित हुआ पड़ा था। सिबली नअमानी ने अपनी पुस्तक 'अल फारूक' में लिखा है कि यह हज़रत मुहम्मद साहिब की मृत्यु के पश्चात संपादित हुआ। इस से पूर्व इसके अलग-अलग हिस्से अलग-अलग शहाबों के पास थे, वह भी कुछ खजूर के पत्तों, कुछ पत्थरों की तख्तियों और कुछ हड्डियों पर अंकित थे। किसी को पूरा कुरान याद भी नहीं था। किसी को कोई सूरत याद थी और किसी को कोई।

कई ऐसे अभिलेख मिलते हैं जिन में असली नाज़िल हुए कुरान की संपूर्णता पर शक किया जाता है। कहा जाता है कि अब के कुरान में कई परिवर्तन किए हुए हैं। कई विद्वान कहते हैं कि कुरान के लिखे जाने के समय पर कुछ सूरतें तो किसी को याद नहीं थीं, इसलिए अब के कुरान में कुछ सूरतें तो हैं नहीं, और कई अधूरी हैं। कइ विद्वानों की राय है कि मौजूदा कुरान का क्रम भी प्रथम कुरान से भिन्न है।

कुरान में निम्नलिखित विषय हैं :

खुदा का स्तुति गायन, हराम-हलाल के मसले, आदम व हव्वा के समाचार, प्रार्थना, निकाह, जेहाद (जंगों का हाल), तलाक के मसले, बहिश्त (स्वर्ग) व दोज़ख (नर्क) के हवाले, रोज़ा, हज, निमाज़, ज़कात, क्यामत व शैतान आदि का तज़रका, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, सुलेमान, यूनस, यूसफ व ईसा के जीवन समाचार, माले गनीमत का बंटवारा। अंत में शैतान से बचने के लिए अल्ला से दुआ मांगी गई है।

फरिश्ते :

कतेबी मतों के अनुसार फरिश्तों की संख्या सवा लाख है। इनमें से नीचे लिखे चार प्रसिद्ध व प्रमुख फरिश्ते माने गए हैं :

(1) **ज़बराईल :** खुदा का कासिद (संदेश पहुंचाने वाला) हैं। इसने समय-समय पर ईश्वर के संदेश पैगंबरों तक पहुंचाए है। इसने बहुत सी आयतें हज़रत मुहम्मद साहिब को ला कर दी थीं।

(2) **मीकाईल** – यह रिज़क, धन-धान्य पहुंचाता है। वर्षा करता है और इज़राइली वंश का संरक्षक है।

(3) **इसराइल** – क्यामत के दिन तुरम (संख) बजाता है, और मुर्दे उठाता है। यह प्रलय ला कर संसार खत्म करने वाला माना गया है।

(4) **इज़राइल** – यह मौत का फरिश्ता माना जाता है। इसको मलकुल मोत भी कहते हैं।

मुसलमानों के त्यौहार

(1) **ईदुल फितर** – रमज़ान के महीने के अंत में, जब रोज़े समाप्त होते हैं तो यह त्यौहार मनाया जाता हैं। चांद देख कर ईद का ऐलान किया जाता है। यदि चांद न दिखलाई दे तो ईद एक आध दिन पीछे डाली जा सकती है।

(2) **ईदुल जुहा** – यह जेअल हिजाह महीने की दसवीं तारीख को मनाई जाती है। इस दिन पशुओं की कुर्बानी दी जाती है। इसको बकरह-ईद भी कहा जाता है। बकरह से भाव गाय की कुर्बानी देने से है।

(3) **शब बरात** – यह त्यौहार शअबानी महीने की 15वीं को मनाया जाता है। हज़रत साहिब का हुकम है कि मुसलमान इस रात का जग्राता काटें और रोज़ा (व्रत) रख कर कुरान के 50 रुकू ज़रूर पढ़े क्योंकि इस रात खुदा बंदों के सारे कर्म बही पर लिखता है।

(4) **नो रोज़** – यह हिज़री सन का पहला दिन है जो नये ईसवीं साल की तरह ही मनाया जाता है। पूरा एक सप्ताह तक खुशियां मनाई जाती हैं।

(5) **आखिरी चहरा शंभा** – सफर के महीने का आखिरी बुद्धवार। इस दिन बीमारी से उठकर हज़रत साहिब ने स्नान किया था।

(6) **मैलूद :** यह हज़रत मुहम्मद साहिब का जन्मदिन है। रबीउल अवल मास की अंतिम तारीख को होता है। इस दिन रोज़ा रख कर दुआ मांगने का आदेश है। इस का अर्थ, फर्ज़ पूरा करने की रात हैं।

मुसलमानों के संप्रदाय

हज़रत मुहम्मद साहिब के देहांत के कुछ समय पश्चात, इस्लाम में धार्मिक मतभेद पैदा हो गए। कुरान और पैगंबर को तो पहले ही माना जाता था पर अब इसके साथ सुन्नत अर्थात सदाचार को भी मिला लिया गया और इस आधार पर हदीसें (सदाचार की पुस्तक) लिखी गई। हदीस कई हैं पर तिरमज़ी व बुखारी अधिक प्रसिद्ध हैं। ज्यों-ज्यों मुसलमानों ने अरब में से निकल सहन का भी असर पड़ा। उनकी बुद्धि भी विकसित हुई। उन में अपने धर्म ग्रंथों के असली या नकली होने के बारे में भी विचार छिड़ गई। इन पर और कई विचारों के कारण मुसलमानों में मतभेद पैदा हो गए और मुहम्मद साहिब का एक मज़हब 73 संप्रदायों में बंट गया। इन में से मुखी संप्रदाय तो 9 ही हैं जो अपनी शाखाओं को छोड़ गए हैं और संप्रदायों की संख्या 73 तक जा पहुंची है। इन में लड़ाई-झगड़े भी होते रहते हैं। शीया और सुन्नी संप्रदाय तो अभी तक भी आपस में फसाद करते रहते हैं।

प्रसिद्ध ख़लीफा :

ख़लीफा का अर्थ है 'पीछे छोड़ना'। भाव यह कि अपनी गैरहाज़री के समय के लिए अपना प्रतिनिधि मुमरर करना। मुहम्मद साहिब की मृत्यु के पश्चात इसलाम के मुखी, पैगंबर का स्थान राज का प्रबंध करने वाले और धर्म प्रचारक हुए। उनको खलीफा कहा जाता है।

खलीफा पहले मक्का में रहते थे जिन में से चार प्रमुख हैं:

(1) **हज़रत अबू बकर** – आप हज़रत मुहम्मद साहिब की पत्नी आयशां के पिता थे और 60 वर्ष की आयु में खलीफा नियुक्त हुए थे। आप केवल सवा दो साल खलीफा रहे। 23 अगस्त सन् 634 को आपका निधन हो गया। इन का ख़िताब, रसूल अल्ला था।

(2) **हज़रत की आयु** – आप भी मुहम्मद साहिब की तीसरी पत्नी हफ़शां के पिता थे। यह इसलाम के उत्तम प्रचारक थे। इन्होंने फारस और मिश्र को फतेह किया। इन्होंने एलेक्ज़ैंडरिया की संसार प्रसिद्ध लायब्रेरी को यह कह कर जला दिया कि यदि इस लायब्रेरी में कुरान के विरुद्ध पुस्तकें है तो इसकी कोई आवश्यक नहीं, और यदि कुरान के अनुसार हैं, तो भी उनकी कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि उनमें अंकित ज्ञान पहले ही कुरान में विद्यमान है। इन्होंने ही यूरोशलम को फतेह करके वहां पर एक बड़ी मस्जिद बनवाई थी जो अब तक उनके नाम से प्रसिद्ध है। इन्होंने इसलामिक शर्राह के अनुसार कानून बनाए। आप 3 नवंबर सन् 644 को सुबह की निमाज़ पढ़ रहे थे कि फिरोज़ गुलाम ने आपको खंजर मार कर घायल कर दिया और तीन दिनों के पश्चात आपका देहांत हो गया। आपका ख़िताब 'अमीरल मोमनीन' था। के पश्चात आपका देहांत हो गया। आपका ख़िताब 'अमीरल मोमनीन' था।

(3) **हज़रत उस्मान** – यह हज़रत मुहम्मद साहिब के जमाई थे। मुहम्मद साहिब की दो पुत्रियां, रुकिया और उमूकलसूम, इनसे विवाहित थीं। हज़रत अबू बकर के पुत्र मुहम्मद ने गद्दी हासिल करने के लिए इनको 30 जून 656 को मदीने में कत्ल कर दिया था।

(4) **हज़रत अली** – यह मुहम्मद साहिब के चचा आबू तालिब के पुत्र थे और उनकी बेटी फातिमा के पति थे। ये सन 656 से 661 तक खलीफा रहे और विरोधियों से तंग आ कर सन 661 में खलाफत त्याग दी तो भी कूफा नाम के स्थान पर अबदुरहमान ने आपको कत्ल कर दिया।

इमाम

सुन्नी मुसलमान चार इमामों को भी मानते हैं। इमाम का अर्थ गुरू अथवा धर्म का आचार्य होता है। इमाम पर विश्वास करने के कारण ही सुन्नी मुसलमानों को इमाम शाफई भी कहा जाता है। इसका अर्थ है – इमाम शकई का चेला। प्रसिद्ध चार इमाम इस प्रकार हैं:

(1) **अबू हनीफा** – इनका जन्म 80 हिज़्री में, कूफा (ईरान) में हुआ इन्होंने कुरान के आधार पर शराह बनाई। इन के पैरोकारों को हनफीयर कहा जाता है। 150 हिज़्री में इनका कालवास हुआ।

(2) **साफी** – इनका पूरा नाम इबन इदरीस शफई था। इन का जन्म हिजरी 150 में व मृत्यु हिजरी 202 में हुई। आप बहुत बड़े विद्वान थे और इनके संप्रदाय का नाम शाफयह है। इन्होंने कुरान और पैगंबर के सदाचार को मिला कर शराह के कानून बनाए।

(3) **मालिक** – इनका पूरा नाम अबू अब्दुला मालिक था। ये महान विद्वान व कठोर तपस्वी थे और पैगंबर के आचारण को ही आदर्श मानते थे। इन्होंने हदीसों को मानने पर खास बल दिया। इसलिए आपके पैरो कारों को अहिले हदीस भी ही कहा जाता है। ये मदीने में 94 हिज़्री में जन्मे व 179 हिजरी में इन का देहांत हो गया।

(4) **अहिमद बिन हंबल** – यह 164 हिज़्री में बगदाद में जन्मे व 241 हिज़्री में इन का देहांत हो गया। यह इमाम शाफी के शगिर्द थे इन्होंने शराह घड़ने के लिए केवल पैगंबर के आचरण का ही अनुपालन किया । इन का विचार था कि कुरान ग़ैबी कलाम है, जिसके सही अर्थ करना, मनुष्य की अक्ल के बस का काम नहीं है।

इसलाम के सिद्धांत

(1) **एकीश्वरवाद –** इसलाम एक ईश्वर के अस्तित्व में निश्चय रखता है। इसलाम के अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान है और जो मर्जी चाहे वही करता है। उस पर कोई नियम लागू नहीं होता। किसी प्रकार का कोई कुदरती नियम या अनादि व्यवस्था ईश्वर की शक्ति को कम नहीं करती है। समूचे तौर पर ईश्वर उन सब के गुनाह क्षमा कर देता है जिन की सिफारिश मुहम्मद साहिब करते हैं हर स्थान पर ईश्वर का आदेश चलता है। उसके बिना किसी दूसरे की पूजा विवर्जित है। ईश्वर (अल्ला) सातवें आकाश पर रहता है। उसका सिंहासन फरिश्तों ने उठाया हुआ है।

(2) **हज़रत मुहम्मद – रब्ब का आखिरी पैगंबर –** इसलाम पैगंबरों के अस्तित्व में विश्वास रखता है और यह मानता है कि हज़रत मुहम्मद साहिब से पूर्व, ईश्वर का आदेश इब्राहीम, मूसा, ईसा जी और अन्य कई पैगंबरों ने लोगों को सुनाया। पर इसलाम मुहम्मद सहिब को आखरी व सब से बड़ा पैगंबर मानता है। इन की सिफारिश के बिना ईश्वर किसी के गुनाह नहीं क्षमा करेगा। करामात, पैगंबरी की एक शर्त मानी गई है। मुहम्मद साहिब के पैगंबर (रसूल) होने के बारे में कुरान में यह अंकित है कि

ला – इला – इलिला हो मुहंमद रसूल अलाह ।।

(अर्थ : मैं गवाही देता हूँ कि बिना अल्लाह के और कुछ भी नहीं। वह एक है और मुहम्मद उस का रसूल है।)

(3) **सलात, निमाज़, दुआ या प्रार्थना :** ईश्वर के सम्मुख दिन में पांच बार विशेष समय पर प्रार्थन या दुआ की जाती है जिस को अरबी में सलात और फारसी में नमाज कहा जाता है। इस में कुछ आयतें ज़ुबानी पढ़ी जाती हैं और साथ ही कुछ शारीरिक आसन बदले जाते हैं। निमाज से पूर्व शरीर और वस्त्र अच्छी तरह शुद्ध करने चाहिए। धरती भी साफ व पवित्र होनी चाहिए। निमाज़ एक अकेला मुसलमान भी पढ़ सकता है और दूसरे मुसलमानों के साथ मिलकर भी सामूहिक निजाम मस्जिद में पढ़ी जाती है। इसमें एक निमाज़ी बाकियों की अगवाई करता हे। निमाज़ के अग्रणी को इमाम कहते हैं। मस्जिद में सामूहिक निमाज़ पढ़ने से पूर्व मस्जिद के मीनार पर चढ़ कर अज़ान (बांग) दे देना जरूरी है ताकि बांग सुन कर सभी एकत्र हो जाएं। निमाज़ के समय जूती का उतारना और सरि ढका होना जरूरी है। निमाज क्यामत की ओर मुंह करके पढ़ी जानी चाहिए। पांच निमाज़ इस प्रकार हैं:

(क) **सलातुल्ल फ़ज़र, या नमाज़ मुबह –** पौष फूटरने से ले कर सूर्य चढ़ने तक की निमाज़।

(ख) **सलातुल्ल ज़हर, या नमाज़े पेशीन –** जब सूर्य ढलने लगे, उस समय की निमाज़

(ग) **सलातुल्ल असर, या नमाज़े दीगर –** तीसरे पहर की निमाज़

(घ) **सलातुल्ल मगरिब, या नमाज़े शाम –** सूर्य छिपने से ले कर सूर्य चढ़ने तक की निमाज।

(ड.) **सलातुल्ल इशा, या नमाज़े खुफतन –** सोने के समय की निमाज़।

उपरोक्त पांच निमाजों के अतिरिक्त नीचे लिखी तीन अख्तियारी निमाज़ें भी हैं:

(क) **सलातुल्ल इशराक, या नमाज़े इसहान –** जब सूर्य अच्छी तरह चढ़ जाए उस समय की निमाज़।

(ख) **सलातुल जुहा, या नमाज़े चाश्त –** दिन के लगभग 11 बजे की निमाज़

(ग) **सलातुल्ल तत्जुद, या नमाज़े तत्तजुद –** आधी रात से कुछ समय पश्चात की निमाज़।

(4) **रोज़े या व्रत :** मुसलमानों को रमज़ान के महीने में 30 रोज़े (व्रत) रखने का आदेश है और शुक्रवार को पवित्र दिन समझा गया है।

हिज़री साल के नौवें महीने को रमज़ान का महीना कहते हैं। इस महीने में रोज़े रखने को कहा गया है। इस महीने बहिश्तों (स्वर्गों) के दरवाजे खुले रहते हैं। शैतान इन दिनों में कैद होता है। **रोज़ा रखना पापों का नाशक है।** (सूरत बकर, आयत 183 से 187)

रोज़ा दिन को होता है, रात को नहीं। विश्वास किया जाता है कि रमज़ान के महीने में शैतान रखा गया एक रोज़ा भी अन्य सैंकड़े दिनों से उत्तम है। रमज़ान के महीने को सारे ही गुनाहों को नष्ट करने वाला महीना माना जाता है । कहते हैं कि इस महीने

को दस तारीख तक रहिमत बरसती है, 20 तारीख तक पदार्थ और फिर 30 तारीख तक दोज़ख (नर्क) से निजात (छुटकारा मिलता है और अन्य भी पंद्रह खास रहिमतें नाज़िल होती हैं। जैसे कि माल दौलत, खाने पीने की बहुतायात, इबादत लग जाने पर और भी कुछ नेकियों में बढ़ोतरी होती है। इस महीने में ज़बराइल व अन्य साठ हज़ार फरिश्तों का आसमानों से नूरी झंडे लहराते हुए धरती पर उतरना व काबा शरीफ, हुजरा मुहम्मद साहिब मस्जिद बैतुल मुकदस आदि पर जाना और फिर सारे संसार में फैल जाना माना गया है।

(5) हज अथवा मक्का की यात्रा

हर मुसलमान के लिए जरूरी है कि वह एक बार मक्का जरूर जाए और क्यामत के मंदिर में जा कर संगे-असवद के दर्शन करे।

हज अक्स हिजरी साल के 12वें महीने जुअल हज में किया जाता है। हज करने वाले (हाजी) काबे में जा कर संगे असवद को चूमते हैं और मंदिर की परिक्रमा करते हैं। वे चाहि ज़मज़म (जिसका पानी गंगा की तरह पवित्र माना जाता है) से पानी मंगा कर पीते हैं।

हज करने की भी एक विशेष विधि है। हाजियों का काफिला (जत्था) मक्का से एक पड़ाव पहले स्नान करता है। हाजी एक चद्दर कमर में पहनते हैं और एक चद्दर साथ ले लेते हैं। नंगे पांव या खड़ांव पहन कर चलते हैं। इस मर्यादा के पालन को अहिराम बांधना कहते हैं। इस पड़ाव से चल कर सारे एक गीत गाते हैं, जिस का भाव इस प्रकार है : मैं तेरी सेवा के लिए खड़ा हूँ तेरा शरीक (बराबर का) कोई नहीं है। निश्चय के कारण तेरी ही महानता और तेरा ही राज्य है। इस को तबलीआं गीत कहते हैं।

काबे के पास स्नान करके, काबे की सात परिक्रमा करते हैं। पहली तीन परिक्रमाएं बांए हाथ रख कर तेज चल कर की जाती हैं और बाद की चार धीरे-धीरे चल कर। हर परिक्रमा के समाप्त होने पर संगे असवद को चूमते हैं। फिर हज़रत इब्राहीम के घर की यात्रा करने के पश्चात, पास की पहाड़ी पर पहुंच कर प्रार्थन करते हैं। फिर मरवा चोटी पर चढ़ कर नमस्कार कर के खुतबा सुनते हैं। इसके पश्चात मिना नाम के मैदान में अराफत की पहाड़ी की दिशा में चल पड़ते हैं और वहां पर उपदेश सुनते व विनतियां करते हैं। शाम की निमाज मुज़दिल लफा नाम के स्थान पर पढ़ते हैं। यह सब कुछ 9 तारीख तक करते हैं। दसवीं को कुर्बानी देने का दिन होता है, जो मिना के स्थान पर दी जाती है। कुर्बानी दूंबे, ऊँठ या गाय की दी जाती है। जानवर का सिर काबे की ओर करके उस को बिठा लेते हैं और फिर उस के दाई ओर खड़े हो कर, अल्ला हू अकबर कहते हैं और गले पर छुरी चलाते हैं।

हज के दिनों में सिर मुंडवाना, नाखून उतारने मना है। वापिसी के समय फिर काबे की परिक्रमा की जाती है और वहां पर शैतान के थंबे को सात पत्थर मारते हैं और ज़मज़म का पानी पीते हैं। इस प्रकार हज के समाप्ति होती है।

(6) **ज़कात –** अपनी कमाई का चालीसवां हिस्सा खुदा के नाम पर देना, अर्थात धर्म अर्थ देना, हर मुसलमान के लिए जरूरी है। इस को ज़कात कहते हैं।

(7) **सुन्नत करवानी –** पुरुष के गुप्त अंग के अगले भाग के लगभग दो उंगली पर्दे के मास को काट देने को सुन्नत करना अथवा खतना करना कहते हैं। मुसलमान होने के लिए सुन्नत के नियम का पालन करना बहुत जरूरी है। हज़रत मुहम्मद साहिब ने भी सुन्नत करवाई थी। जो काम मुहम्मद साहिब ने अपनी उमत को शिक्षा देने के लिए किए, वे सारे ही सुन्नत रूप कहे जाते है।

(8) **क्यामत –** सृष्टि के अंत वाले दिन को क्यामत का दिन कहते हैं। मुसलमानों का विश्वास है कि क्यामत जरूर आएगी। उस दिन सभी मुर्दे अपनी कब्रों में से उठा खड़े होंगे। पाप व दुश्कर्म करने वाले बंदे दोज़ख (नर्क) में भेज दिए जाएंगे और अच्छे काम करने वाले बहिश्त (स्वर्ग) में। बहिश्त में केवल वे ही बंदे जाएंगे जिन की सिफारिश हज़रत मुहम्मद साहिब करेंगे। प्रलय (क्यामत) के भयानक दुखों और सजा से छुटकारा किसी दैवी स्वत्याग से नहीं होगा, बल्कि यह तो ईश्वर के ज्ञान के द्वारा उसके आदेश और हज़रत मुहम्मद साहिब की सिफारिश से ही होगा।

(9) **शैतान –** शैतान एक मनोकल्पित हस्ती है जो मनुष्य को पाप करने के लिए प्रेरित करती है। उस ने ईश्वर के आदेश की अवहेलना करके आदम को सिजदा करने से इनकार कर दिया, इसलिए वह स्वर्ग में से निकाल दिया गया । शैतान ही बदी (बुराई) का मूल है।

इसलामी सिद्धांतों की गुरमत से तुलना

इसलाम भी सिख धर्म की भांति एक संगठित या सामाजिक धर्म है। दोनों धर्म मनुष्यों के निजी जीवन का आध्यात्मिक और सदाचारक पक्ष से बुलंदियों पर ले जा कर, पूरे समाज को उच्च मूल्यों पर धारणकर्ता बनना चाहते हैं। दोनों एकीश्वर में विश्वास रखने का उपदेश देते हैं और देवी-देवताओं के अस्तित्व को बिल्कुल ही रद्द करते हैं और मूर्ति पूजा के सख्त विरोधी हैं। प्रभु के आदेश और रज़ा, अरदास, संगत, भक्ति के साथ शक्ति के सुमेल आदि सिद्धांतों में भी दोनों में निकटता नज़र आती है। पर कई तरह से निकटता होने के बावजूद भी दोनों धर्मो में कई सैद्धांतिक अंतर हैं। नीचे दोनों धर्मो के अलग अलग धार्मिक विश्वासों के बारे में विचार अंकित किए जाते हैं।

(1) **ईश्वर :** इसलाम की तरह गुरमत एकीश्वरवाद में तो विश्वास करती है और यह भी मानती है कि दृश्य व अदृश्य ब्रहमांड की उत्पत्ति का कारण एक अकालपुरख है जिसका आदेश (अटल व स्थाई सिद्धांत) हर स्थान पर चल रहा है। पर गुरमत इसलाम की तरह यह नहीं मानती कि ईश्वर किसी सातवें आसमान पर दरबार लगा कर बैठा हुआ है यह उस का सिंहासन फरिश्तों ने उठाया हुआ है। गुरमत के अनुसार तो प्रभु हर स्थान पर व्याप्त है-सर्व व्यापक है। वह अपनी कुदरत में उसी तरह ही मौजूद है जैसे दूध में घी होता है। पांचवें पातशाह गुरु अर्जन साहिब जी का फुर्मान हैं :

सगल बनसपति महि बैसंतरु, सगल दूध महि घीआ ॥

ऊच नीच महि जोत समाणी, घटि घटि माधउ जीआ ॥1॥

संतह, घटि घटि रहिआ समाहिओ ॥

पूरन पूरि रहिओ सरब महि, जलि थलि रमईआ आहिओ ॥1॥ रहाउ ॥2॥

(सोरठि महला 5, पृष्ठ 617)

ईश्वर का आदेश : सिख धर्म भी इस्लाम की भांति यह मानता है कि अकाल पुरख सर्वोच्च और स्वतंत्र हस्ती है। उस पर कोई भी कानून या नियम लागू नहीं होता। बल्कि प्रभु तो एक हाकित की भांति है जिस का आदेश हर स्थान पर चल रहा है। दृश्यमान और अदिृष्ट संसार का सारा काम उस के अटल नियम (हुकम) के अधीन ही चल रहा है :

सभे सुरती, जोग सभि, सभे बेद पुराण ॥

सभे करणे, तप सभि, सभे गीत गिआन ॥

सभे बुधी, सुधि सभि, सभि तीरथ, सभि थान ॥

सभि पातसाहीआ, अमर सभि, सभि खुसीआ, सभि खान ॥

सभे माणस, देव सभि, सभे जोग धिआन ॥

सभे पुरीआ, खंड सभि, सभे जीअ जहान ॥

हुकम चलाए आपणे, करी वहै कलाम ॥

नानक, सचा, सचि नाइ, सचु सभा दीबानु ॥

(सलोक महला 1 वार सारंग 1241)

ईश्वर की कृपा : इसलाम की भांति गुरमत भी ईश्वर की कृपा व आशीष के सिद्धांत की समर्थक है। ईश्वर की प्राप्ति ईश्वर की कृपा से ही हो सकती है। अकेले कर्मों से नहीं। पापों के फलस्वरूप मिली सज़ा को भी ईश्वर की कृपा द्वारा ही काटा जा सकता है। गुरबाणी के फुर्मान हैं :

– नदरि करे ता मेलि मिलाए ।। गुण संग्रहि अउगण सबदि जलाए ।।

गुरमुखि नाम पदारथु पाए ।। (गउड़ी महला 1 पृष्ठ 222)

– नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ।। आतमा द्रवे रहै लिव लाइ ।।

आतमा परातमा ऐको करै ।। अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ।। (धनासरी महला 1, पृ 661)

– किआ हंसु किआ बगुला, जा कउ नदरि धरे ।।

जो तिसु भावै नानका, कागहु हंसु करे ।। (सलोक सेख फरीद के – 1374 (

(2) **मुहम्मद साहिब –** गुरमत, हज़रत मुहम्मद साहिब को अंतिम पैगंबर नहीं मानती। बल्कि यह मानती है कि हजारों पैगंबर व महापुरुष संसार में पैदा होते रहते हैं और उनका अंतकाल होता रहता है। गुरमत यह भी नहीं मानती कि किसी खास पैगंबर की सिफारिश से इनसान के सारे किये गुनाह क्षमा हो जायंगे या वह मनुष्य मरने के पश्चात स्वर्गो का वासी हो जाएगा। गुनाहों की सजा से बचने के लिए परमात्मा के नाम का जाप करना, उसका गुण गायन करना, परमात्मा के सम्मुख अरदास करना और विकारों व माया के घात प्रभावों से बच कर सदकर्म करके, अपने किरदार को ऊँचा व निर्मल करना आदि जरूरी हैं। प्रभु अपने भक्तों पर कृपा की दृष्टि कर के उन के पुराने पाप क्षमा कर देता है और आगे से सही रास्ते पर चला देता है।

(3) **निमाज़ :** इसलाम की भांति गुरमत भी ईश्वर के सन्मुख प्रार्थना (निमाज़) या अरदास करना जरूरी समझती है। पांच निमाज़ों की तरह अमृत बेला में, शाम को और रात्रि को सोते समय विशेष बाणियों के पाठ करने की हिदायत, रहित मर्यादा में की गई है। गुरबाणी में हर पल प्रभु की याद में बिनाने और उस के सम्मुख अरदास विनती करने के उपदेश अंकित हैं। अरदास व्यक्तिगत भी हो सकती है और संगत में भी। हाँ, निमाज या पाठ के द्वारा मनुष्य को अपने अंदर ऊँचे व निर्मल आध्यात्मिक और सदाचारक गुण पैदा करने चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता तो यह सब प्रयास निरे कर्म कांड बन कर रह जाते हैं जो कि एक नियम की पूर्ति के तौर पर किया जाता है। सतगुरू जी ने ऐसी पाठ पूजा का खंडन किया है। गुरू नानक पातशाह ने अपने समय के मुसलमानों को स्पष्ट करके कहा था:

पंजि निवाजा, वखत पंजि, पंजा पंजे नाउ ।।

पहिला सचु, हलालु दुइ, तीजा खैर खुदाइ ।।

चउथी नीअति रासि मनु, पंजवीं सिफति सुनाइ ।।

करणी कलमा आखि कै, ता मुसलमाणु सदाइ ।।

नानक जेते कुड़िआर, कूड़ै कूड़ी पाइ ।। (वार माझ, महला 1, पृष्ठ 141)

गुरमति प्रभु को हर स्थान पर सर्वव्यापक समझती है और मुसलमानों की तरह किसी खास दिशा विशेष (पश्चिम दिशा में काबे की ओर) मुंह करके अरदास करने का खंडन करती है। दसम पातशाह ने त्वप्रसादि सवैईए (अकाल उस्तति) में प्रभु को किसी विशेष दिशा में जानकर, उधर मुंह करके अरदास करने को कूड़ क्रिया कहा है।

(4) **रोज़े :** गुरमत, ब्राहमणी धर्म के व्रतों और इसलाम के रोज़ों का खंडन करती है। इनसे मनुष्य की आत्मा को कोई लाभ नहीं होता न ही यह मनुष्य के पापों का नाश कर सकते हैं। गुरमति की स्पष्ट हिदायत है :

– वरत न रहउ, न मह रमदाना ।।

तिसु सेवी, जो रखै निदाना ।। (भैरउ महला 5, पृष्ठ 1136)

यथा

– अंनु न खाहि, देही दुख दीजै ।।

बिनु गुर गिआन त्रिपति नहीं थीजै ।। (रामकली महला 1, पृष्ठ 905)

गुरमत, इसलाम की भांति रमज़ान के महीने और जुम्मा (शुक्रवार) को पवित्र नहीं मानती। गुरमत के अनुसार सारे महीने, दिन, तारीखें एक समान ही हैं। कोई भी पवित्र या अपवित्र नहीं। तारीखों और दिन-वारों के शुभ अशुभ होने के विचार करने वाले को गुरमत में महामूर्ख कहा गया है।

सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु ।।

थिति वार सेवहि मुगध गवार ।। (बिलावलु महला 3, पृष्ठ 843)

अच्छा या बुरा कोई विशेष समय नहीं होता बल्कि अच्छी या बुरी तो मनुष्य की अपनी करनी होती है। यदि मनुष्य प्रभु के रंग में रमा रहे तो उस के लिए सारे महीने, तिथियां, वार व ऋतुएं भली हैं:

– बे दस माह रुती, थिति वार भले ।।

घड़ी मूरत पल, साचे आए सहिज मिले ।। (तुखारी महला 1 पृष्ठ 1109)

(**बो – दो, बेदस –** दो और दस, बारह। **माह** – महीने। **मूरत** – मुहूर्त)

– दिन रैण सभ सुहावणे पिआरे, जितु जपीऐ हरि नाउ ।। (आसा महला 5, बिरहड़े पृष्ठ 432)

यथा

– सा वेला, सो मूरत, सा घड़ी, सो महतु सफल है,

मेरी जिंदुड़ीए, जितु हरि मेरा चिति आवै राम ।। (बिहागड़ा महला 5, छंत 450)

गुरमति, इसलाम के इस विश्वास को भी नहीं मानती कि रमज़ान के महीने में विशेष दैवी रहिमत होती हैं और फरिश्तें आसमान से उतर कर धरती पर आते हैं। गुरमत तो फरिश्तों के अस्तित्व में ही विश्वास नहीं करती और न ही आसमान में किसी विशेष स्थान के अस्तित्व को ही मानती है जहां पर, मुसलमानी विश्वास के अनुसार फरिश्ते निवास करते हैं।

(5) **हज** – जैसा कि पहले ही पढ़ चुके हैं, मक्का की यात्रा को हज कहा जाता है। इतिहासिक धार्मिक स्थानों का अपना महत्व होता है। यहां पर जा कर मनुष्य धार्मिक प्रेरणा प्राप्त करते हैं और अपने रहबर के साथ संबंधित स्थानों पर जा कर खुशी प्राप्त करते हैं। यह बात तो ठीक है पर किसी खास स्थान पर ईश्वर की प्राप्ति के लिए जाने को गुरमत ठीक नहीं समझती है। प्रभु हर स्थान पर व्यापक है और मनुष्य के अपने अंदर भी है। इसलिए उसे को कुदरत और अपने हृदय में से ही खोजना चाहिए। भगत कबीर जी व्यंग्यात्मक ढंग से हज का विरोध करते हुए कहते हैं:

कबीर हज काबे हउ जाइ था, आगै मिलिआ खुदाइ ।।

सांई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किनि फरमाई गाइ ।। 197 ।।

यथा

कबीर हज काबै होइ होइ गइआ, केती बार कबीर ।।

सांई मुझ महि किआ खाता, मुखहु न बोले पीर ।। 198 ।। (सलोक भगत कबीर जीउ के पृष्ठ 1375)

अर्थ : हे कबीर! मैं काबा का हज करने जा रहा था। वहां जाते हुए आगे से खुदा मिल गया। वह मेरा साई, मेरा मालिक, (इस बात से खुश होता कि मैं उसके घर जा रहा हूँ) मेरे पर गुस्से हुआ और कहने लगा कि तुझे किस ने कहा है कि तूं मेरे नाम पर गाय की कुर्बानी दे?

(अगले श्लोक में कबीर साहिब कहते हैं कि) मैं कई बार काबा का दीदार करने गया हूँ। पर हे खुदा! तूं मेरे से बात ही नहीं करता। मेरे अंदर तूं क्या खता देख रहा है? (भाव - हज और कुर्बानी से भी ईश्वर खुश नहीं होता है) गुरमत हज करने की जगह पर मन की पवित्रता पर अधिक बल देती है :

सचु कमावै सोई काजी ॥ जो दिलु सोधै सोई हाजी ॥ (मारू महला 5, पृष्ठ 1074)

हज के अंत में दुंबे, ऊंठ या गाय की कुर्बानी दी जाती है। गुरमत पशु - बलि का विरोध करती है। धर्म के नाम पर बलि देने वाले मनुष्यों को कसाई से भी बुरा कहा गया है :

जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु, अधरमु कहहु कत भाई ॥

आपस कउ मुनिवर करि थापहु, का कउ कहहु कसाई ॥

(राग मारू, बाणी कबीर जीउ की पृष्ठ 1103)

(6) **ज़कात :** संगठन, जत्थेबंदी अथवा समाज के कल्याण के लिए अपनी जीविका में से अपिर्त किए गए धन को इसलाम में ज़कात और गुरमत में दसवंध का नाम दिया गया है। ज़कात कमाई का चालीसवां हिस्सा होती है और दसवंध दसवां। गुरू नानक पातशाह का फर्मान है:

घालि खाइ, किछु हथहु देहि ॥ नानक, राहु पछाणहि सेइ ॥

(सारंग की वार, सलोक महला 1 पृष्ठ 1245)

भाई देसा सिंघ जी के रहितनामे में दसबंध का हिस्सा निकालने के बारे में यह स्पष्ट हिदायत है :

दस नरव कर जो कार कमावै ॥ ता कर जो धन घर में आवै ॥

तिस ते गुरु दसौंध जो देई ॥ सिंघ सुजस बहु जग में लेई ॥

(7) **सुन्नत :** गुरमति किसी प्रकार का भी शारीरिक छेदन करने की आज्ञा नहीं देती जबकि सुन्नत करवाना प्रत्येक मुसलमान के लिए लाज़मी है। भगत कबीर जी अपनी व्यंगयात्मक शैली में सुन्नत का खंडन इस प्रकार करते हैं।

सकति सनेहु करि सुंनति करीऐ, मैं न बदउगा भाई ॥

जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा , आपन ही कटि जाई ॥ (आसा कबीर जी, पृष्ठ 477)

आगे चलकर कबीर साहिब कहते हैं कि यदि मुसलमानों के लिए सुन्नत करवाना लाज़मी है तो महिलाओं को मुसलमान कैसे बनाया जाएगा?

सुंनति कीए तुरकु जे होइगा, अउरत का किआ करीऐ ॥ (आसा कबीर जी, पृष्ठ 477)

(8) **क्यामत :** इसलाम क्यामत में विश्वास करता है। माना जाता है कि क्यामत वाले दिन सभी आदमी अपनी कब्रों में से उठ खड़े होंगे। शुभ कर्म करने वाले बहिश्त (स्वर्ग) में चले जाएंगे और दुश्कर्मी दोज़ख (नर्क) में। गुरमत क्यामत के सिद्धांत में विश्वास नहीं करती बल्कि आत्मा के आवागमन में विश्वास करती है। मनुष्य के मर जाने के पश्चात उसकी आत्मा, चोला बदलती है और अपने किये कर्मो के अनुसार वह अच्छा या बुरा जीवन व्यतीत करती है। जन्म मृत्यु का यह क्रम जारी रहता है। यह क्रम तब खत्म होता है जब मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर लेता है। जब मनुष्य विकारों और माया के बंधनों से मुक्त जीवन व्यतीत करता है और प्रभु के स्तुति गायन में जुड़ा रहता है तो वह अपनी आत्मा को बेहद निर्मल कर लेता है। मौत के पश्चात ऐसे मनुष्य की आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है व मनुष्य का आवागवन कट जाता है।

इसलाम की तरह गुरमत में स्वर्ग - नर्क को कोई महत्व नहीं दिया गया है। बल्कि इन के अस्तित्व को रद्द कर दिया गया है :

- कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा, संतन दाऊ रादे ।।

हम काहू की काणि न कढते, अपने गुरपरसादे (रामकली, कबीर जी पृष्ठ 163)

यथा

- कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ, सतिगुर कै परसादि ।।

चरन कमल की मउज महि, रहउ अंति अरु आदि ।। (सलोक भगत कबीर जीउ के पृष्ठ 1360)

(9) **शैतान :** गुरमति किसी शैतान की हस्ती में विश्वास नहीं करती है। इसलाम के अनुसार शैतान मनुष्य को पाप और बुराई की ओर प्रेरित करता है। गुरमत के अनुसार माया दुखों का मूल कारण है और मनुष्य को प्रभु से दूर ले जाती है। काम, क्रोध, लाभ, मोह, अहंकार - पांच विकारा माया यानी भौतिकवाद के हथियार हैं। मनुष्य ने इन से बचना है। इन को अपने नियंत्रण में रखना है। सच्चे दिल से और एकाग्रता से प्रभु का स्तुति गायन करने से मनुष्य पांच विकारों पर विजय प्राप्त कर लेता है। ऐसे मनुष्य पर माया अथवा भौतिकता का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। माया, मनुष्य की उस वृत्ति का नाम है जो मनुष्य को ईश्वरीय मार्ग से हटा पर पापों व विकारों की राह पर चलाती है।

(10) **कर्म का सिद्धांत :** इसलाम की भांति गुरमत, कर्म के सिद्धांत को मानती है। अंतर केवल इतना है कि गुरमत के अनुसार मनुष्य अपने कर्मो के अनुसार जन्म मरण के भंवर में पड़ा रहता है और जब ईश्वर की कृपा से ये कर्म दग्ध हो जाते हैं तो मनुष्य प्रभु में लीन हो जाता है। पर इसलाम के अनुसार मनुष्य, कर्मो के परिणाम स्वरूप स्वर्ग या नर्क में जाता है।

(11) **जात - पात :** इसलाम की भांति सिख धर्म भी जात पात का कड़ा विरोध करता है। यह सब मनुष्यों को एक समान समझता है।

परिणाम स्वरूप हम कह सकते हैं कि इसलाम और गुरमत एकीश्वरवाद, प्रभु के आदेश व कृपा, निमाज़ (प्रार्थना) ज़कात (दसवंध), कर्म के सिद्धांत और जात पात के बारे में लगभग एक समान विचार रखते हैं, पर हज़रत मुहम्मद के अंतिम पैगंबर होने के बारे में रोज़े रखने, हज करने, पशुओं की कुर्बानी देने, सुन्नत, क्यामत स्वर्ग - नर्क व शैतान आदि के बारे में दोनों के विचार परस्पर विरोधी हैं।

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ

Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting :

Radheshyam Choudhary

Mob. : 098149- 66882